

गम पे गम इतने मिले, शाही खजाना बन गया

इस जिन्दगी का मेरी मर्मा, कैसा फसाना बन गया

① हर रोज किल्लतों का यह दौर चल रहा
हालात देख कर के मेरी, कैसा दीवाना बन गया
इस जिन्दगी - - - - -

② अपने ही सपने बन गये गम पे गम - - - - -
मौत तो आनी ही थी, गैरी को क्या करे
इस जिन्दगी - - - - -

③ बेगान की कीमत यह, गम पे गम - - - - -
ऐसी घड़ी में आदमी कीमत नहीं है, जब की
इस जिन्दगी - - - - -

④ हंसती हुई, ये जिन्दगी गम पे गम - - - - -
अब तो श्री चरणों में मर्मा, श्री बाणा श्री बोम बन गई
इस जिन्दगी - - - - -